रवि शाक्य
इखाछैँ, यल

पुरातत्त्व प्रकाशन माला—४

प्राचीन लिपि विकास

पं० शङ्करमान राजवंशी
द्वारा सम्पादित

प्रकाशक :
श्री ५ को सरकार, पुरातत्त्व र संस्कृति विभाग
नेपाल

प्रकाशक :

श्री ५ को सरकार

पुरातत्त्व र संस्कृति विभाग

नेपाल

प्रथम संस्करण

वि० सं० २०१७

मूल्य

दुई शब्द

नेपाल अधिराज्यभित्र विभिन्न प्राचीन लिपिमा लेखिएका सामग्री भएका कीर्ति-स्तम्भ, सुवर्ण-पत्र, ताम्र-पत्र, ताड़-पत्र, काष्ठ-पत्र, इष्टिका-पत्र, भुर्ज-पत्र, हस्तलिखित पुस्तक र अनेक कागजातहरू यत्र-तत्र प्रसस्त छरिएका पाइन्छन्। यी सब महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्रीहरूको अन्वेषण, अध्ययन र अनुसन्धान निमित्त प्राचीन लिपिको ज्ञान हुनु अत्यावश्यक छ। यसै अभावको पूर्तिका निमित्त विभिन्न लिपि माला प्रकाश गर्ने तर्जुमा गरिएको हो। आशा छ, यी पुस्तिकाहरू पुरातत्त्व प्रेमी सवै महानुभाव र विद्यार्थीहरूका लागि उपयोगी सिद्ध हुने छन्।

श्री ५ को सरकार
पुरातत्त्व र संस्कृति विभाग
नेपाल
२०१७ आषाढ़ ३०

सत्यमोहन जोशी
डाइरेक्टर

विषय-सूची

उदाहरणमाला

[स्वरवर्ण]

ब्राह्मी	पूर्वलिच्छवि	उत्तरलिच्छवि	भोंट	रञ्जना	भुजिमोल	पाचुमोल	देवनागरी
							ॐ
							अ
							आ
							इ
							ई
							उ
							ऊ
							ऋ
							ए
							ऐ
							ओ
							औ
							अं
							अः

[व्यञ्जनवर्ण]

ब्राह्मी	पूर्वलिच्छवि	उत्तरलिच्छवि	भोट	रञ्जना	भुजिंमोल	पाचुमोल	देवनाग
𑀓			ཀ		𑐎	𑐎	क
𑀔			ཁ		𑐏	𑐏	ख
𑀕			ག		𑐐	𑐐	ग
𑀖			གྷ		𑐑	𑐑	घ
𑀗			ང		𑐒	𑐒	ङ
𑀘			ཅ		𑐔	𑐔	च
𑀙			ཆ		𑐕	𑐕	छ
𑀚			ཇ		𑐖	𑐖	ज
𑀛			ཇྷ		𑐗	𑐗	झ
𑀜			ཉ		𑐘	𑐘	ञ

ब्राह्मी	पूर्वलिच्छवि	उत्तरलिच्छवि	भोटे	रञ्जना	भुजिंमोल	पाचुमोल	देवनागरी
𑀝	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ट
𑀞	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ठ
𑀟	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ड
𑀠	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ढ
𑀡	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ण
𑀢	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	त
𑀣	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	थ
𑀤	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	द
𑀥	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ध
𑀦	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	न

पूर्वलिच्छवि	उत्तरलिच्छवि	भोट	रञ्जना	भुजिंमोल	पाचुमोल	देवनागरी
						प
						फ
						ब
						भ
						म
						य
						र
						ल
						व
						श

पूर्वलिच्छवि	उत्तरलिच्छवि	भोंट	रञ्जना	भुजिंमोल	पाचुमोल	देवनागरी
						ष
						स
						ह
						क्ष
						त्र
						ज्ञ
						क्य
						क्ल
						क्व
						क्र

ब्राह्मी	पूर्वलिच्छवि	उत्तरलिच्छवि	भोटे	रञ्जना	भुजिंमोल	पाचुमोल	देवनागरी
							क
							का
							कि
							की
							कु
							कू
							कृ
							के
							कै
							को
							कौ
							कं
							कः

[संख्या]

ब्राह्मी	पूर्वलिच्छवि	उत्तरलिच्छवि	भोटे	रञ्जना	भुजिंमोल	पाचुमोल	देवनागरी
𑁒	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१
𑁓	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२
𑁔	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३
𑁕	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४
𑁖	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५
𑁗	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६
𑁘	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७
𑁙	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८
𑁚	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९

ब्राह्मी	पूर्वलिच्छवि	उत्तरलिच्छवि	भोटे	रञ्जना	भुजिँमोल	पचुमोल	देवनागरी
𑁛	[illegible]	[illegible]	༡༠	𑑑𑑐	𑑑𑑐	𑑑𑑐	१०
𑁜	[illegible]	[illegible]	༢༠	𑑒𑑐	𑑒𑑐	𑑒𑑐	२०
𑁝	[illegible]	[illegible]	༣༠	𑑓𑑐	𑑓𑑐	𑑓𑑐	३०
𑁞	[illegible]	[illegible]	༤༠	𑑔𑑐	𑑔𑑐	𑑔𑑐	४०
𑁟	[illegible]	[illegible]	༥༠	𑑕𑑐	𑑕𑑐	𑑕𑑐	५०
𑁠	[illegible]	[illegible]	༦༠	𑑖𑑐	𑑖𑑐	𑑖𑑐	६०
𑁡	[illegible]	[illegible]	༧༠	𑑗𑑐	𑑗𑑐	𑑗𑑐	७०
𑁢	[illegible]	[illegible]	༨༠	𑑘𑑐	𑑘𑑐	𑑘𑑐	८०
𑁣	[illegible]	[illegible]	༩༠	𑑙𑑐	𑑙𑑐	𑑙𑑐	९०
𑁤	[illegible]	[illegible]	༡༠༠	𑑑𑑐𑑐	𑑑𑑐𑑐	𑑑𑑐𑑐	१००

ब्राह्मी	पूर्वलिच्छवि	उत्तरलिच्छवि	भोटे	रञ्जना	भुजिमोल	पाचुमोल	देवनागरी
	[illegible]	[illegible]	२००	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२००
	[illegible]	[illegible]	३००	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३००
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४००
	[illegible]	[illegible]	५००	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५००
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६००
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७००
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८००
	[illegible]	[illegible]	९००	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९००

टिप्पणी— अघिल्ला लिच्छविकालको लिपिलाई गुप्ता लिपि र पछिल्ला लिच्छविकालको लिपिलाई कुटिला लिपि भनी व्यवहार गरिआएको थियो। अबदेखि गुप्ता लिपिलाई पूर्वलिच्छविलिपि र कुटिला लिपिलाई उत्तरलिच्छविलिपि भन्ने भनी श्री ५ को सरकार पुरातत्त्व तथा संस्कृति विभागबाट निर्णय भएकोले यहाँ सोही नाम लेखिएको ।

उदाहरणमाला

लुम्बिनीको अशोकस्तम्भको अभिलेख

[पुरातत्त्वविभागको संग्रहबाट]

दे वा न पि ये न पि य द सि न ला जि न वी स ति व सा भि सि ते न
अ त न आ गा च म ही यि ते हि द बु धे जा ते स क्य मु नी ति
सि ला वि ग ड भी चा का लां पि त सि ला थं भे च उ स पा पि ते
हि द भ ग वं जा ते ति लुं मि नि गा मे उ ब लि के क टे
अ ठ भा गि ये च

निग्लिहवाको अशोकको अभिलेख

[पुरातत्त्वविभागको संग्रहबाट]

दे वा न पि ये न पि य द सि न ला जि न चो द स व सा
बु ध स को ना क म न स थुं बे दु ति यं व ढिं ते
— — — — सा भि सि ते न च अ त न आ गा च म हि यि ते
— — — — — — — — — — पा पि ते

चाँगुको राजा मानदेवको स्तम्भाभिलेख
बाट

[वीरपुस्तकालय]

सं व त् ३ ८ ६ ज्ये ष्ठ मा से शु क्ल प क्षे प्र ति प दि
रो हि णी न क्ष त्र यु क्ते च न्द्र म सि मु हू र्त्ते प्र श स्ते भि जि ति

अ स्त्रा पा स्त्र वि धा न कौ श ल गु णैः प्र ज्ञा न स त्पौ रु ष
श्री म च्चा रु भु जः प्र मृ ष्ट क न क श्ल क्ष्णा व दा त च्छ विः
पी नां सो वि क चा सि तो त्प ल द ल प्र स्प र्द्ध मा ने क्ष णः
सा क्षा त्का म इ वा ङ्ग वा न्न र प तिः का न्ता वि ला सो त्स वः

पृ.१ नं. पलाञ्चोकको राजा मानदेवका समयको अभिलेख

[पुरातत्त्वविभागको संग्रहबाट]

संवत् ४२५ माघ शुक्ल पौर्णमास्याम्
अस्यान्दिवसपूर्व्वायां भट्टारकमहाराजश्रीमान
देवस्य
साग्रं वर्षशतमाज्ञापयतः संप्राद्गृहपते
स्यपत्न्या विजयस्वामिन्या प्रतिष्ठापिता देवी भगवती वि
जयश्री

पशुपतिको द्वितीय जयदेवको अभिलेख
बाट

---[illegible]
--------[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] --------
----[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
---------[illegible]

---- श्रीजयदेवनामनृपतिः प्रादुर्बभूवापरः ॥ एकादश क्षिति
--------- त्यान्तरे विजयिनो जयदेवनाम्नः ॥ श्रीमान्वभूव वृष
देव इति प्रतीतो राजोत्तमः सुगतशासनपक्षपाती ॥ अभू
त्ततः शङ्करदेवनामा श्रीधर्म्मदेवोप्युदपादि तस्मात्
श्रीमानदेवो नृपतिस्ततो भूत्ततो महीदेव इति प्रसिद्धः ॥ व
सन्त इव लोकस्य कान्तः शान्तारिविग्रहः ॥ आसीद्वसन्तदेवो
स्माद्दान्तसामन्तवन्दितः ॥ अस्यान्तरेप्युदयदेव इति क्षिती
शाज्ज्ञातस्त्रयो
दश -- श्रीनरेन्द्रदेव। ----------------------
------ हर्त्ता संश्रितसाधुवर्गविपदां सत्यस्य वक्ता ततो जातः
श्रीशिवदेव इत्यभिमतो लोकस्य भर्त्ता भुवः ॥ देवी वाहुवलाढ्यमौख
रवरिं कुलश्रीवर्म्म
चूडामणि ख्यातिह्रेपितवैरिभूपतिगण श्रीभोगवर्म्मोद्भवा ॥ दौहित्री
मगधाधिपस्य महतः श्र्यादित्यसेनस्य याव्यूढा श्रीरिव तेन साक्षिति
भुजा श्रीवत्सदेव्यादरात् ॥
तस्माद्भूमिभुजोप्यजायत जितारातेर जय्यः परै राजा श्रीजयदेव इ
त्यवगतः श्रीवत्सदेव्यात्मजः ॥
--------- संवत् १५७ कार्त्तिक शुक्लनवम्याम् ॥

ཨོཾ་མ་ཎི་པདྨེ་ཧཱུྃ = ॐ मणिपद्मे हूँ

ཨོཾ་ན་མོ་བུདྡྷཱ་ཡ = ॐ नमो बुद्धाय

ཨོཾ་ན་མོ་དྷརྨཱ་ཡ = ॐ नमोधर्माय

ཨོཾ་ན་མཿསངྒྷཱ་ཡ = ॐ नमः सङ्घाय

ཨོཾ་ན་མོ་རཏྣ་ཏྲ་ཡཱ་ཡ = ॐ नमोरत्नत्रयाय

ཨོཾ་ན་མོ་བྷ་ག་ཝ་ཏྱཻ = ॐ नमो भगवत्यै

ཨོཾ་ན་མོ་བཛྲ་སཏྭཱ་ཡ = ॐ नमोवज्रसत्वाय

ཨོཾ་ན་མཿཤ་ཏ་སཱ་ཧ་སྲི་ཀཱ་ཡཻ = ॐ नमःशतसाहस्रिकायै

ཨོཾ་ན་མ་ཨཱཪྻ་པྲཛྙཱ་པཱ་ར་མི་ཏཱ་ཡཻ = ॐ नमआर्यप्रज्ञापारमितायै

ཨོཾ་ན་མོ་ཧེ་རུ་ཀ་ཤྲཱི་ཙཀྲ་སཾ་བ་རཱ་ཡ = ॐ नमोहेरुक श्रीचक्रसंवराय

सरकारी राष्ट्रिय पुस्तकालयमा रहेको चण्डीमहात्म्य पुस्तकबाट

(सम्वत् ५८५ ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे त्रयोदश्यां तिथौ ॥ स्वा
तिनक्षत्र ॥ सिद्धियोग ॥ आदित्यवासरे ॥ श्रीश्रीश्री मत्पशुप
तिचरणकमलसेवित श्रीश्रीश्री मान्मानेश्वरीष्टदेवतावरलब्ध
प्रसाद वीरनारायणाङ्गवतार श्रीश्रीजययक्षमल्लदेवस्य
विजयराज्ये ॥

तस्यासीत्प्रथितमहीपतीन्द्रवन्द्यपादाम्बुजयुगलस्या
दीनानां सकलार्थिनाञ्च सहसां सत्कल्पवृक्षायमः ।
जातः सूर्यकुलावने सलिलधेः सम्पारिजातोज्ज्वला
वीरः श्रीजयकीर्त्तिमल्लनृपतिः श्रीत्रयनारायणांशः ॥
तस्यात्मजः सकलनीतिविशारदश्च
नाथाङ्कभानुगुणशीलमहाप्रतापः ।
सत्यंददाति दृढयश्मादन मन्त्रधर्मी
श्रीकीर्त्तिमल्लनृपतेरिव यक्षमल्लः ॥
तस्याज्ञेभिरचना पूर्वालिपिकच्छलामसहात्मना ।
जयसिंहनाम्ना लिखितश्चण्डीमाहात्म्यपुस्तकः ॥

श्रेयोऽस्तु सम्वत् ५२१ वैशाखशुक्लपञ्चम्यान्तिथौ ॥ मूलनक्षत्रे ॥ शिवयोगे ॥ आदित्यवासरे ॥ श्रीश्रीश्रीमत्पशुपतिचरणकमलसेवित श्रीश्रीश्रीमानेश्वरीष्टदेवतावरलब्धप्रसादवीरनारायणजुवराजश्रीश्रीजयधर्म्ममल्लदेवस्य विजयराज्ये ॥

नेपालेऽस्ति महीपतीश्वरवरो दाता गुणग्राहको
दीनानां सकलार्थिनाञ्च महतां सत्कल्पवृक्षोपमः ।
जातः सूर्यकुलावतंसतिलके सर्व्वो निरपून्निर्जितो
वीरः श्रीजयकीर्तिमल्लनृपतिः श्रीरूपनारायणः ॥
रूपोत्तमः सकलनीतिविदाम्वरिष्ठो
नाट्याङ्गशास्त्रगुणगीतमहाप्रवीणः ।
सत्सुंदरीहृदयमोहनमन्मथश्रीः
श्रीकीर्तिमल्लनृपतो रिपुचक्रमल्लः ॥
तस्याज्ञां शिरसाधृत्वा लिपिकरेण महात्मना ।
जसपतिना समालेखि चण्डीमाहात्म्यपुस्तकः ॥

वीर पुस्तकालयमा रहेको पञ्चरक्षा पुस्तक
बाट

१ नमो भगवत्यै आर्य महासाहस्रप्रमर्दन्यै ॥ एवम्मया श्रुतमेक
स्मिन्समये भगवान्राजगृहे विहरति स्म ॥ गृध्रकूटपर्वते दक्षिणे
पार्श्वे वज्रगाववरनिर्झरप्राग्भारे महता भिक्षुसंघेन सा
र्द्धमर्द्धत्रयोदशभिर्भिक्षुशतैः ॥ तद्यथा। आयुष्मता च शारिपुत्रेण।
आयुष्मता च महामौद्गल्यायनेन। आयुष्मता च महाकाश्यपेन। आ
युष्मता च गयाकाश्यपेन। आयुष्मता च नदीकाश्यपेन। आयुष्मता
चोरुबिल्वाकाश्यपेन। आयुष्मता चाज्ञातकौण्डिन्येन। आयुष्मता च
महाकात्यायनेन। आयुष्मता च बकुलेन। आयुष्मता च बाष्पेन। आ
युष्मता च कौष्ठिलेन। आयुष्मता च वागीशेन। आयुष्मता चाश्वजिता।
आयुष्मता च सुभूतिना। आयुष्मता च सुबाहुना। आयुष्मता चानिरु
द्धेन। आयुष्मता च रेवतेन। आयुष्मता च नन्दिकेन। आयुष्मता चा
नन्देन॥ एवम्प्रमुखैरर्द्धत्रयोदशभिर्भिक्षुशतैः। - - - - - - - -
सम्वत् २६७ फाल्गुनशुक्लपञ्चम्या आदित्यदिनवारे श्रीमदेवय
मल्लदेवस्य विजयराज्ये॥ शुभमस्तु सर्वजगताम् ॥ ० ॥

ॐ नमो भगवत्यै आर्यमहासाहस्रप्रमर्दन्यै ॥ एवम्मया श्रुतमेकस्मिन्स
मये भगवान्राजगृहे विहरति स्म ॥ गृध्रकूटे पर्वते दक्षिणे पार्श्वे वङ्गो
चररत्नवृक्षप्रभासे वनषण्डे महता भिक्षुसंघेन सार्द्धमर्द्धत्रयोदशभि
र्भिक्षुशतैः ॥ तद्यथा ।आयुष्मता च शारिपुत्रेण ।आयुष्मता च महामौ
द्गल्यायनेन ।आयुष्मता च महाकाश्यपेन ।आयुष्मता च गयाकाश्य
पेन, आयुष्मता च नदीकाश्यपेन।आयुष्मता चोरुविल्वाकाश्यपेन। आयुष्म
ता चाज्ञातकौण्डिन्येन ।आयुष्मता च महाकात्यायनेन ।आयुष्मता च
वकुलेन । आयुष्मता च बाष्पेण ।आयुष्मता च कौष्ठिलेन । आयु-
ष्मता च वागीसेन ।आयुष्मता चाश्वजिता ।आयुष्मता च सुभूतिना
आयुष्मता च सुबाहुना ।आयुष्मता चानिरुद्धेन ।आयुष्मता च रैवतेन
आयुष्मता च नन्दिकेन। आयुष्मता चानन्देन ।एवम्प्रमुखैरर्द्धत्रयोदश
भिर्भिक्षुशतैः । ------- सम्वत् ३६७ फाल्गुणशुक्लैकादस्या
आदित्यदिने राज्ये श्रीमदभयमल्लदेवस्य विजयराज्ये ॥ शुभमस्तु स
र्वजगतां ॥०॥

सरकारी राष्ट्रिय पुस्तकालयमा रहेको
शतसाहस्रिका प्रज्ञापारमिता
बाट

शतसाहस्र्याः प्रज्ञापारमितायाः द्वादशः परिवर्त्तः । प्रथमखण्डः समाप्त इति ॥ ॥ श्रीमद्राजाधिराजपरमभट्टारकश्रीमच्छ्रीश्रीसिद्धिनरसिंहमल्लदेवस्य विजयराज्ये ॥
------------- सम्वत [illegible] प्रथमाषाढशुक्लद्वितीयायां शनैश्चरदिने पुनर्वसुनक्षत्रे योगवृद्धिशुभानुकूले ।
श्रीजयमुनिवज्राचार्येण लिखित समाप्त कृतमिति ॥ ----
श्रीश्रीनिवासानन्ददेवराजा यान्तु पुत्रानी प्रतिपालदकः ।
तस्यप्रसादाच्च विजित्यमायां लिखितलख प्रज्ञा सकली सलक्षौ ॥
य श्रीनिवासानयधर्मवारी ददो विवाद्धी लिखनाय प्रज्ञा ॥

अब्द नेपालिके ख्यात ग्रहवह्निसंयुत ।
मासेतु प्रथमाषाढशुक्लपक्ष द्वितीयके ॥
पुनर्वसो च नक्षत्रे वृद्धियोगेन दिने ।
प्रज्ञापारमिता पूर्णं जयराम लिखितापुरी ॥

शतसाहस्र्याः प्रज्ञापारमितायाः द्वादशः परिवर्त्तः । प्रथमखण्डः समाप्त इति ॥ ॥श्रीमद्राजाधिराजपरमेश्वरपरमभट्टारक श्रीमच्छ्री श्री सिद्धिनरसिंहमल्लदेवस्य विजयराज्ये ॥

------------- सम्वत् ७६९ प्रथमाषाढ शुक्ल द्वितीयायां शनैश्चरदिने पुनर्वसुनक्षत्रे योगे वृद्धि शुभानुकूले ।

श्रीरयमुनिवोद्धाचार्येण लिखित समाप्तकृतमिति॥ ----

श्री श्रीनिवासो नरदेवराजा यो भूत्प्रजानां प्रतिपालदक्षः ।

तस्य प्रसादाच्च विजित्य माराँ ल्लिलेख प्रज्ञां सकलां सलक्षा ॥

यच्छ्रीनिवासो नयधर्मवारी ददौ विबोद्धा लिखनाय प्रज्ञां ॥

अब्दे नेपालिके ख्याते ग्रहषड्गिरिसंयुते

मासे तु प्रथमाषाढे शुक्लपक्षे द्वितीयके ।

पुनर्वसौ च नक्षत्रे वृद्धियोगे शनेर्दिने

प्रज्ञापारमिता पूर्णा जगाम लिखिता शुभं ॥

वीरपुस्तकालयमा रहेको वाल्मीकिरामायण बाट

प्राप्तमृषिष्ठयारस्यसर्वतः४ त्र्यविलोकयन् । त्याऊनानीमतस्यान्न
वनराजीश्चयमंदह। रुचिरश्च यतान्नवविविधद्रुमसमाश्रितं। द्वीपि
शाखामृगोर्ष्ट मलायायवनं महत्। सागरं सागरानूपान् सागरा
नूपजान् द्रुमान्। सागरस्य च पत्नीनां मुखान्यप्यवलोकयन्। समहा
मेघसंकाशं वीक्ष्य नात्मानमात्मवान्। निरुध्य मनसा वाक्यं वकारस
मितिं मतिं। कायवृद्धि प्रवेशं च समहात्मेव वाक्य सा४ । --------
इत्यार्षे रामायणे किष्किन्धाकाण्डे समुद्रलंघनं समाप्तं ॥ संवत्
१०७६ आषाढवदि ४ महाराजाधिराज पुण्यावलोकसोमवं
शोद्भव गरुडध्वज श्रीमद्गांगेयदेव भुज्यमान तीरभुक्तौ कल्या
णविजयराज्ये नेपालदेशीय पाटकोशालिक श्रीआनन्द ।

प्राप्तभूयिष्ठपारश्च सर्वतः प्रविलोकयन् । योजनानां शतस्यान्ते
वनराजीं ददर्श ह । रुचिरश्च पतन्नेव विविधद्रुमशोभितं । द्वीपि
शाखामृगैर्हृष्टं मलयोपवनं महत् । सागरं सागराभूषान् सागरा
रूपजान् द्रुमान् । सागरस्य च पत्नीनां मुखानि व्यवलोकयन् । स महा
मेघसंकाशं वीक्ष्यन्नात्मानमात्मवान् । निरुत्सनामिवाकाशं चकार म
तिमान्मतिं । कायवृद्धिप्रवेशाच्च मम दृष्ट्वैव राक्षसा - - - - - - - - - -

इत्यार्षे रामायणे किष्किन्ध्याकाण्डे समुद्रलंघनं समाप्तं ॥ संवत्
१०७९ आषाढ वदि ४ महाराजाधिराज पुण्यावलोक सोमवं
शोद्भव गरुडध्वज श्रीमद्गाङ्गेयदेव भुज्यमान तीरभुक्तौ कल्या
णविजयराज्ये नेपालदेशीय भाण्डशालिक श्री आनन्द ।